https://www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

सिस्टमिक लुपस एरीदीमॅटोसस

के संस्करण 2016

२. निदान व् उपचार

२.१. इस बीमारी का निदान कैसे किया जाता है?

इस बीमारी का निदान रोगी के बताये लक्षण व् रोगी में पाये जाने वाले संकेत देख कर किया जाता है। इसके साथ खून व् पेशाब की जांच के साथ अन्य बीमारियां ना होने की स्थिति में ही इस बीमारी का निदान किया जाता है।इस बीमारी के निदान में कठिनाई होती है क्योंकि रोगी में सभी संकेत व् लक्षण एक साथ नहीं प्राप्त होते।इस बीमारी को अन्य बिमारियों से भिन्न कर पाने के लिए अमेरिकन रहूमेटिस्म एसोसिएशन ने ११ लक्षणों की सूची बनाई है जो इस बीमारी के निदान में मदद करते हैं।

यह सूची उन लक्षणों को ध्यान में रख कर बनाई गयी है जो इस बीमारी में आमतौर पर पाये जाते हैं।११ में से काम से काम ४ लक्षण होने पर ही इस बीमारी का ठोस निदान किया जाता है,हालाँकि वरिष्ठ चिकित्सक ४ से काम लक्षण होने पर भी इस बीमारी का निदान कर पाते हैं।यह लक्षण निम्न हैं:

चेहरे पर तितिली के आकर की लाली

यह लाली आँखों के नीचे गालों पर व् नाक के ऊपर होती है

धूप से त्वचा का प्रभावित होना

धूप से सेंसिटिविटी होने से धूप का प्रकोप अधिक होता है और कपड़ों से ढकी हुई त्वचा पर असर नहीं होता

डिस्कॉइड लूपस

यह पैसे के आकर का उभरा हुआ दाग होता है जिसके ऊपर से त्वचा की परत छूट जाती है,ठीक होने के पश्चात यह दाग छोड़ देता है।दूसरे समुदायों की तुलना में अफ़्रीकी बच्चों में यह अधिक पाया जाता है।

नाक व् मुंह में छाले

यह छाले नाक व् मुंह के अंदर होते हैं।इनमे दर्द नहीं होता।नाक के छालों में से खून भी बह

सकता है।

गठिया

इस बीमारी में गठिया से अधिकतर बच्चे पीड़ित होते हैं।इसमें ऊँगली,कलाई,कोहनी,घुटने,कंधे आदि जोड़ों में दर्द व् सूजन आ जाती है।यह सूजन एक जोड़ से दूसरे में आ सकती है या दोनों तरफ के एकसे जोड़ों में भी आ सकती है।जोड़ों में अधिकतर टेढ़ापन नहीं आता।

प्लूराइटिस

फेफड़े की ऊपरी झिल्ली यानी प्लूरा के प्रज्ज्वलन को प्लूरसिी कहते हैं और ह्रदय की झिल्ली यानो पेरीकार्डियम के प्रज्ज्वलन को पेरिकार्डटिसि कहते हैं।इन नाज़ुक झिल्लिओं के प्रज्ज्वलन के कारण ह्रदय व् फेफड़ों के इर्द गिर्द पानी इक्कठा हो जाता है।फेफड़ों के इर्द गिर्द पानी आने से श्वास लेने में तकलीफ होती है।

गुर्दों पर प्रभाव

अधिकतर बच्चों के गुर्दे इस बीमारी से प्रभावित होते हैं,किसी में कम व् किसी में बहुत अधिक प्रभाव देखा जाता है।शुरुआत में गुर्दे प्रभावित होने का कोई लक्षण नहीं दिखता व् पेशाब एवं गुर्दों के कार्य की खून जांच से ही इस खराबी का पता किया जाता है। अधिक खराबी होने पर पेशाब में अधिक प्रोटीन बहार निकलता है व् पैरों और आखों के इर्द गिर्द सूजन दिखाई देती है।

केंद्रीय तंत्रिका तंत्र

दिमाग पर प्रभाव से सर दर्द,दौरे,व् मनोविकार जैसे ध्यान न लगा पाना,याद न रख पाना,उदासी या अवसाद,मनोविकृति(एक गंभीर मानसिक रोग जिसमे सोच व् व्यव्हार परिवर्तित हो जाते हैं)हो सकते हैं।

रक्त कण के विकार

रक्त कण एंटीबाडीज के प्रभाव से नष्ट होने लगते हैं।लाल रक्त कण(जो शरीर के विभिन्न अंगों तक ऑक्सीजन पहुंचाते है)के टूटने को हेमोल्यसिस कहते हैं और इससे हेमोल्यटिक एनीमिया हो सकता है।रक्त कण नष्ट होने की प्रक्रिया धीमी व् काम हानिकारक हो सकती है या अधिक रक्त कण एकदम नष्ट होने से आपात्कालीन स्तिथि आ सकती है।
रक्त के सफ़ेद कण भी एसएलई में कम हो जाते हैं पर यह गंभीर नहीं होता।सफ़ेद कण की कमी को लुकोपीनिआ कहते हैं।
रक्त के जमाव में सहायता करने वाले कण जो की प्लेटलेट कहलाते हैं, उनकी कमी को थ्रोम्बोसीटोपेनिअ कहते हैं।प्लेटलेट कण की कमी से बच्चों के आंत,दिमाग,गुर्दे व् चमड़ी से रक्त रिस सकता है।

प्रतिरक्षा शक्ति की खराबी

प्रतिरक्षा शक्ति की खराबी उन एंटीबाडीज की खराबी होती है जो इस बीमारी की ओर इशारा करती है।

एंटिफॉस्फोलिपिड एंटीबाडी का होना(अपेंडिक्स-१)
एंटी नेटिव डीएनए एंटीबाडी(यह एंटीबाडी शरीर के अनुवांशिक तत्व के खिलाफ होती है)यह एंटीबाडी ख़ास लुपस में ही पायी जाती है व् इसकी मात्र का माप करने से चिकित्सक को लुपस की दशा मापने में मदद मिलती है।
एंटी एसएम एंटीबाडी: यह एंटीबाडी सबसे पहले मिस स्मिथ नामक महिला में देखी गयी थी।यह एंटीबाडी एस एल ई की बीमारी में पायी जाती है।

एंटी न्यूक्लीयर एंटीबाडी (ऐएनए)

यह एंटीबाडी रक्त कण के न्यूक्लियस के विरुद्ध होती हैं व् लुपस के लगभग शतप्रतिशत मरीज़ों के रक्त में पायी जाती हैं।परन्तु सिर्फ ऐएनए का पाया जाना ही इस बीमारी का सबूत नहीं होता,यह सिर्फ एक लक्षण है।ऐएनए ५ -१५ % स्वस्थ बच्चों में भी पाया जाता है।

इन जांचों का क्या महत्व है?

इन जांचों के द्वारा हम लुपस की बीमारी की पुष्टि कर सकते हैं व् यह भी देख सकते हैं की इस बीमारी की वजह से शरीर के कौन कौन से अंग प्रभावित हुए हैं। इस बीमारी में समय समय पर रक्त व् पेशाब की जांच करना ज़रूरी है जिससे इस बीमारी की तीव्रता व् दवा के दुष्परिणाम अथवा दवा के असर के बारे में जानकारी मिल सके।

सामान्य जाँचे विभिन्न अंगों के असर को दर्शाती हैं। ईएसआर(एरीथ्रोसाइट सेडीमेंटशन रेट) व् सीआरपी (सी रिएक्टिव प्रोटीन),दोनों ही प्रज्ज्वलन में बढ़ी हुई मात्र में पाये जाते हैं।लुपस की बीमारी में सी आर पी ठीक भी हो सकता है व् सी आर पी अधिक होने से कीटाणु का संक्रमण होने की संभावना होती है। रक्त कण की जांच से एनीमिया, सफ़ेद कण की कमी व् प्लेटलेट की कमी के विषय में जानकारी मिलती है। सीरम प्रोटीन एलेक्ट्रोफोरेसिस से गामा ग्लोब्युलिन की मात्र का अनुमान लगता है (जो इस बीमारी में प्रज्ज्वलन व् एंटीबाडी अधिक होने से बढ़ जाते हैं।) एल्ब्यूमिन: गुर्दे पर प्रभाव होने से यह कम हो जाता है रक्त की सामान्य जांच जैसे यूरिया,नाइट्रोजन,इलेक्ट्रोलाइट इत्यादि से गुर्दे पर प्रभाव,जिगर व् मांसपेशियों पर प्रभाव देखा जा सकता है। लिवर फंक्शन टेस्ट व् मसल एंजाइम: इनके द्वारा जिगर व् मांसपेशियों पर प्रभाव देखा जा सकता है। गुर्दे पर प्रभाव देखने के लिए बीमारी की शुरुआत व् समय समय पर पेशाब की जांच करना अनिवार्य है।पेशाब की जांच में यदि लाल रक्त कण व् एल्ब्यूमिन पाया जाता है तो वह गुर्दे के प्रज्ज्वलन की ओर संकेत करता है।कभी कभी २४ घंटे का पेशाब इकट्ठा कर उसमें एल्ब्यूमिन की जांच करनी पड़ती है जो गुर्दे की बीमारी को जल्दी पकड़ पाने में मदद करती है। कॉम्प्लीमेंट लेवल: कॉम्प्लीमेंट प्रोटीन हमारे शरीर की जन्मजात प्रतिरोधक शक्ति का हिस्सा होते हैं।कुछ कॉम्प्लीमेंट(सी३ व् सी ४)प्रज्ज्वलन में काम हो जाते हैं व् लुपस की बीमारी की तीव्रता दर्शाते हैं,ख़ास कर गुर्दे की बीमारी का अनुमान कॉम्प्लीमेंट कम होने से लगाया जाता है। शरीर के विभिन्न अंगों पर लुपस के प्रभाव को देखने के लिए अब कई जाँचे उपलब्ध हैं,जैसे बायओपसी(किसी अंग के टुकड़े की जांच), गुर्दे की बायोपसीअधिकतर तब की जाती है जब गुर्दे पर प्रभाव देखा जाता है।इस जांच से गुर्दे पर लुपस के प्रभाव के बारे में जानकारी मिलती है व् सही दवाएं देने में मदद

मलिती है।त्वचा की बायोपसी से लुपस के कारन त्वचा पर होने वाले प्रभाव व् त्वचा की रक्त कोशकिाओं में होने वाले प्रज्ज्वलन के वषिय में जानकारी मलिती है। छाती का क्ष करिण (दलि व् फेफड़े के लएि),इकोकार्डओिग्राफी, इलेक्ट्रोकार्डओिग्राफी,इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राफी,पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट,एमआरआई,दमिाग के स्कैन,अन्य अंगों की बायोपसी इत्यादि अन्य जाँचे हैं जो इस बीमारी में की जा सकती हैं।

२.३ क्या इसका इलाज संभव है?

अभी इस बीमारी को जड़ से समाप्त करने का कोई इलाज संभव नहीं है। इस बीमारी का इलाज कर इससे होने वाली जटलिताओं का नदिान कयिा जा सकता है व् वभिन्नि अंगों को प्रभावति होने से बचाया जा सकता है। शुरुआत में बीमारी का भार अधकि होने के कारण ज़्यादा और अधकि मात्र में दवाएं इस्तेमाल करनी पड़ती हैं पर कुछ समय में कुछ दवाओ के साथ बच्चों की तबयित बलिकुल ठीक रह सकती है

२.४ इस बीमारी के लएि क्या इलाज उपलब्ध हैं?

इस बीमारी के लएि बच्चों में उपयोग के लएि कोई भी दवा अधकिृत नहीं है और अधकिांश दवाएं शरीर में लुपस के कारण होने वाले प्रज्ज्वलन को काम करने में ही मदद करती हैं। इस बीमारी के इलाज के लएि ५ तरह की दवाएं इस्तेमाल की जाती हैं,जो नम्निन हैं:

नॉन स्टेरॉइडल एंटी इंफ्लेमेटरी ड्रग्स (एन एस ऐ आई डी)

एन एस ऐ आई डी जैसे आइबूप्रोफेन अथवा नेप्रोसीन गठयिा के कारण होने वाले दर्द को काम करने में मदद करती हैं।इन दवाईओं को शुरुआत में अधकि मात्र में दे कर इनकी मात्र गठयिा काम होने के साथ काम कर दी जाती है। यह दवाएं कई प्रकार की होती हैं,एस्परिनि भी इसी गुट की एक दवा है जो जोड़ों के दर्द में इस्तेमाल की जाती है।बच्चों में एस्परिनि काम मात्र में तब दी जाती है जब रक्त के जमने व् रक्त का थक्का बनने की सम्भावना होती है।

एंटी मलेरअिल ड्रग्स

एंटी मलेरअिल ड्रग्स जैसे हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वनि इस बीमारी में होने वाली त्वचा की तकलीफ का इलाज व् उसकी रोकथाम करने में बहुत मदद करती हैं।इन दवाइओं का असर होने में कभी कभी कुछ महीने भी लग जाते हैं। शुरुआत में ही यह दवाएं देने से लुपस की तीव्रता व् उसके कारण से होने वाली गुर्दे, ह्रदय व् अन्य अंगों की खराबी को रोक जा सकता है।मलेरयिा व् लुपस का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है पर हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन शरीर की प्रतरिोधक शक्तिको काबू में रखने में मदद करती है।

कॉर्टकिोस्टेरॉइड्स

कॉर्टकिोस्टेरॉइड्स,जैसे प्रेड्नसिोन व् प्रेड्नसिोलोन, प्रज्ज्वलन को काम कर के प्रतरिोधक शक्तिकी खराबी को कम करते हैं।यह लुपस की बीमारी की रोकथाम के लएि प्रमुख

दवाएं हैं। कुछ बच्चों की हलकी बीमारी के लिए प्रेड्नसिोलोन व् हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन ही पर्याप्त होते हैं।जब बीमारी अधिक तीव्र होती है या अंदरूनी अंगों की खराबी के साथ होती है तब इन दवाइयों को इम्मुनोसप्प्रेस्सवि ड्रग्स के साथ मलिा कर दयिा जाता है।बनिा कर्टकिोस्टेरॉयड्स की मदद के शुरुआत में लुपस की बीमारी पर काबू नहीं पाया जा सकता। कुछ बच्चों को यह दवाएं महीनों ये कुछ साल के लिए भी लेनी पड़ सकती हैं। बीमारी की तीव्रता व् अंगों पर प्रभाव के अनुसार कॉर्टकिोस्टेरॉइड्स की मात्रा नर्धिारति की जाती है। अधकि मात्रा में या नस के द्वारा यह दवा तब दी जाती है जब गुर्दे, दमिाग व् लाल रक्त कण पर लुपस का प्रभाव होता है। इसको लेने से बच्चे एकदम से अच्छा महसूस करने लगते हैं पर लम्बे समय तक अधकि मात्रा में यह दवाएं हानकिारक होती हैं,इसीलिए बीमारी काबू में आते ही इनकी मात्रा जल्दी से जल्दी काम कर दी जाती है। इन दवाओं को धीरे धीरे काम कयिा जाता है व् रक्त की जांच व् बच्चे की जांच कर के इनकी मात्रा काम की जाती है जसिसे बीमारी दबी रहे व् वापसि न आ पाये।
कभी कभी कुछ कशिोरावस्था के बच्चे इन दवाइयों के दुष्परणिाम के कारण या अच्छा महसूस न करने के कारण इन दवाइयों की मात्रा अपने आप काम या अधकि कर लेते हैं। कोर्टसिोन हमारे शरीरमें भी बनता है, पर जब हम यह अधकि मात्रा में लेते हैं तब हमारे शरीर में इसकी उत्पादन बंद हो जाता है,इसीलिए बच्चों व् उनके अभभिावकों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है की यह दवाएं अपने आप बनिा चकित्सिक की अनुमतिके कम,ज़्यादा या बंद करना खतरनाक व् जानलेवा हो सकता है।
यदिकॉर्टकिोस्टेरॉइड्स लम्बे समय तक उपयोग कयिे जाते हैं तब हमारे शरीर के एड्रेनल ग्रंथिइनका उत्पादन बंद कर देती हैं।कोर्टसिोन हमारे रक्तचाप को बनाये रखने में मदद करता है व् एकदम इसे काम कर देना जानलेवा भी हो सकता है। इसके अलावा एकदम से इसे बंद कर देने से बीमारी वापसि भी आने का खतरा होता है।

नॉन बायोलॉजकिल डजिीज मोडफ़िायगि ड्रग्स

यह दवाएं,जैसे की एज़ाथाएोप्रीन, मेथोट्रेक्सेट, साइक्लोफोस्फेमाईड व् माइकोफनोलेट, कॉर्टकिोस्टेरॉइड्स से भन्नि रूप से काम करती हैं। इनका उपयोग चकित्सिक तब करते हैं जब लुपस की बीमारी सर्फि कॉर्टकिोस्टेरॉइड्स के उपयोग से काबू में नहीं आ पाती। कॉर्टकिोस्टेरॉइड्स के दुष्प्रभाव को काम करने व् बीमारी की तीव्रता को शांत करने के लिए इनका उपयोग कयिा जाता है।
एज़ाथाएोप्रीन व् माइकोफनोलेट गोलयिों के रूप में, साइक्लोफोस्फेमाईड गोलयिों व् नस के द्वारा व् मेथोट्रेक्सेट गोलयिों व् त्वचा के अंदर सुई के द्वारा दएि जाते हैं।

बायोलॉजकि (डी एम ऐ आर डी)

बायोलॉजकि (डी एम ऐ आर डी) दवाएं एक वशिेष प्रकार की दवाएं होती हैं जो अनुसन्धान के बाद बनाई जाती हैं।यह दवाएं या तो कसिी एंटीबाडी के बनने को रोकती हैं या कसिी एंटीबाडी के प्रभाव को रोकती हैं।इसी गुट की एक दवा जसिका नाम रीतुक्समिैब है,इस बीमारी में तब इस्तेमाल करी जाती है जब अन्य साधारण दवाएं पूरी तरह बीमारी पर काबू नहीं कर पाती।बेलीमुमाब नामक एक अन्य दवा इसी गुट में शामलि है जो शरीर के बी सेल्स को लक्षय बनती है व् ऑटोएन्टीबॉडी का उत्पादन कम करती है,फलिहाल यह दवा लुपस के व्यसक

मरीज़ों में इस्तेमाल की जाती है।बच्चों में इन दवाओं के उपयोग पर अभी अनुसन्धान चल रहा है।
ऑटोइम्मुन बिमारिओं खासकर लुपस पर सक्रिय रूप से अनुसन्धान चल रहा है जिससे ऐसे दवाएं बनाई जा सके जो पूरी प्रतिरोधक शकती को कम न करके सिर्फ उन सेल्स को लक्ष्य बनाये जो इस बीमारी में खास रूप अदा करते हैं।आजकल इन दवाओं पर बहुत अनुसन्धान चल रहा है जिससे निश्चित ही लुपस से पीड़ित बच्चों का भविष्य बेहतर हो पायेगा।

२.५. इन दवाओं के दुष्प्रभाव क्या है?

ये दवाएँ लुपुस की बीमारी के सभी लक्षणों को दूर करने में मदद करती है ।अन्य दवाओं की तरह इन के भी दुष्प्रभाव होते हैं ।इनकी जानकारी ड्रग थेरेपी के अंतर्गत दी गई है ।

l=15*t1>नॉन स्टेरॉइडल एंटी इंफ्लेमेटरी ड्रग्स (एन एस ऐ आई डी) कुछ खाने के बाद लेने चाहिये नहीं तो वे पेट में जलन पैदा कर सकते हैं ।इसी क़े साथ इन दवाओं की वजह से कभी कभी आसानी से नील पड़ जाना अथवा,जिगर व गुर्दे पर प्रभाव भी पड़ सकता है ।एंटी मलारिअल दवाएं आँख की रेटिना नामक परत में बदलाव ला सकतीं हैं,इसीलिए मरीज़ों को नियमित रूप से आँखों की जांच आँखों के डॉक्टर द्वारा करवानी चाहिए।

कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स के कम व अधिक समय के दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इन दवाओं को लम्बे समय तक अधिक मात्र में लेने से इनके दुष्प्रभाव होने का खतरा अधिक होता है। इन दवाओं के मुख्य दुष्प्रभाव निम्न हैं: शरीर की बनावट में फर्क आना(जैसे,गालों का फूलना,आँखों पर सूजन आना, शरीर पर अधिक बाल उगना,त्वचा पर बैंगनी धारियां पड़ना,मुंहासे होना अथवा जल्दी नील पड़ जाना) वज़न को नियंत्रित करने के लिए खान पान व् कसरत का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। संक्रमितरोग जैसे क्षय रोग व् चिकिन पॉक्स होना का अधिक खतरा होता है।जो बच्चा यह दवाएं ले रहा होता है व् चिकिन पॉक्स के मरीज़ के संपर्क में आता है ,उसे तुरंत अपने चिकित्सक को मिलना चाहिए। चिकिन पॉक्स से तत्काल सुरक्षा के लिए ऐसे बच्चों को पहले से बनी एंटीबाडी दी जानी चाहिए। पेट की तकलीफ जैसे बदहज़मी होना या पेट में जलन होना।इस तकलीफ के लिए एंटी अलसर दवाएं दी जाती हैं। विकास में कमी होना कम देखे जाने वाले दुष्प्रभाव: उच्च रक्तचाप मांसपेशियों में कमज़ोरी(बच्चों को सीढियाँ उतरने,चढ़ने में व् बैठ कर खड़े होने में कठिनाई होती है) ग्लूकोस के पाचन में दिक्कित,खास कर जब अनुवांशिक रूप से मधुमेह होने की सम्भावना हो। मिजाज़ में परिवर्तनआना,उदास रहना आंखों में तकलीफ जैसे मोतिया बिंद बनना अथवा आंख का प्रेशर बढना(ग्लौकोमा) हड्डियों क पतला पड़ना(ऑस्टियोपोरोसिस)।यह दुषप्रभाव कसरत करने,कैल्शियम से भरपूर खान पान व् कैल्शियम एवं विटामिन डी लेने से नहीं होता। यह ध्यान रखना ज़रूरी है की यह दुष्प्रभाव स्टेरॉयड्स कम करने से कम या पूरी तरह खत्म हो जाते हैं।
डी एम ऐ आर डी(बायोलॉजिक व् नॉन बायोलॉजिक) भी दुष्प्रभाव कर सकते हैं जो कभी कभी गंभीर भी हो सकते हैं।

२.६. इलाज कब तक चलना चाहिए?
जब तक इस बीमारी के लक्षण रहते हैं तब तक इलाज बंद नहीं होना चाहिए।यह एक मानी हुई बात है की बच्चों में स्टेरॉयड्स को पूरी तरह हटा पाना बहुत कठिन होता है। यदि काम से काम मात्र में भी स्टेरॉयड्स लेते हुए बच्चों की बीमारी के लक्षण दबे रहे तब भी उनकी बीमारी लम्बे समय तक शांत रह सकती है। कई मरीज़ों में बीमारी बार बार उभर कर न आ पाये इसके लीए यही एक बेहतर मार्ग सिद्ध हो सकता है।

२.७. पारम्परिक इलाजों का इस बीमारी में क्या योगदान है?
कई पारम्परिक इलाज उपलब्ध होने के कारण माता पिता व् परिवार जन भ्रमित हो सकते हैं।यदि आप अपने बच्चे के लिए इन औषधियों का उपयोग करना चाहते हैं तो पहले आने बालरोग चिकित्सिक से सलाह अवश्य कर लें क्योंकि कभी कभी इन औषधियों के दुष्प्रभाव हो सकते हैं व् दो प्रकार की पैथी की दवा मिला कर देने से बच्चे को अधिक हानि पहुँच सकती है।यह समझना अति आवश्यक है की जब लुपस की बीमारी को काबू में रखने के लिए दवाएं दी जा रही होती हैं,तब उन्हें यकायक बंद करने से बीमारी की तीव्रता बढ़ सकती है व् जानलेवा हो सकती है।इसीलिए किसी अन्य प्रकार की औषधि देने से पूर्व अपने चिकित्सिक से सलाह अवश्य कर लें।

२.८. समय समय पर कौन सी जाँचे आवश्यक हैं?
नियमित रूप से चिकित्सिक से परामर्श इस बीमारी में आवश्यक होता है क्योंकि इस बीमारी में अधिकांश तकलीफें यदि जल्दी पहचान ली जाएं तो उनका समय पर निदान किया जा सकता है।आमतौर से हर ३ महीने में चिकित्सिक से परामर्श अनिवार्य होता है।ज़रुरत के अनुसार विभिन्न परामर्श किये जाने चाहिए जैसे: बाल चार्म रोग विशेषज्ञ,बाल रक्त रोग विशेषज्ञ,बाल गुर्दारोग विशेषज्ञ इत्यादि।इनके अलावा साइकोलॉजिस्ट,सामाजिक कार्यकर्ता,आहार विशेषज्ञ व् अन्य स्वास्थ देखभाल कर्मचारी भी लुपस से पीड़ित बच्चों की देखबहाल में मदद करते हैं।
इन बच्चों की कुछ जाँचें नियमित रूप से होनी चाहिए जैसे: रक्तचाप का माप,पेशाब की जांच,रक्त कण व् चीनी की मात्र की जांच,कोएगुलेशन टेस्ट,कॉम्प्लीमेंट लेवल,डी एस डी एन ऐ इत्यादि। जब लुपस के लिए दवाएं चल रही होती हैं तब नियमित रूप से रक्त कण की जांच अनिवार्य होती है जिससे यह जांच हो जाये की यह दवाएं रक्त कण के बनने में कोई खराबी तो नहीं कर रहीं।

२.९. यह बीमारी कब तक जारी रहती है?
जैसा पहले बताया गया है,इस बीमारी का कोई ठोस निदान नहीं है।नियमित रूप से बाल रोग विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार दवाएं लेते रहने से इस बीमारी के लक्षण पूरी तरह समाप्त हो सकते हैं।अन्य कारकों के अलावा,पूरी तरह दवा ना लेना,संक्रमित रोग होना,मानसिक दबाव होना व् अधिक धुप में रहने से यह बीमारी तीव्र हो सकती है।इस को "लुपस फ्लेयर" भी कहा

जाता है।

२.१०.लम्बे दौरान में इस बीमारी में क्या होता है?
इस बीमारी का लम्बे दौर के बाद परिणाम दवाओं के प्रयोग से बहुत अच्छा हो सकता है।इस बीमारी से पीड़ित कई बच्चे लम्बे समय तक ठीक रहती हैं।कुछ बच्चों में यह बीमारी गंभीर रूप ले ले कर बचपन व् किशोरावस्था में भी रह सकती है व् इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। बच्चों में इस बीमारी का परिणाम इस पर भी निर्भर करता है की अंदरूनी अंगों पर कितना प्रभाव है।जिन बचूं को दिमाग पर अथवा गुर्दे पर प्रभाव होता है,उनको अधिक लम्बे समय तक दवाओं की आवश्यकता पड़ती है।इसके विपरीत जिन बच्चों को हलकी सी त्वचा की तकलीफ व् गठिया का असर होता है,उनकी बीमारी दवाओं के माध्यम से जल्दी ही काबू में आ जाती है व् लम्बे समय तक शांत रहती है।पर किसी एक बच्चे के लिए यह निश्चित तौर पर कह पाना बहुत मुश्किल है की उसकी बीमारी का दौर कैसा रहेगा।

२.११.क्या यह बीमारी जड़ से समाप्त हो सकती है?
यह बीमारी,यदि शुरुआत में ही पकड़ ली गयी व् इसका इलाज शुरू कर दिया गया तब लम्बे समय के लिए इसके लक्षण समाप्त हो जाते हैं।परन्तु यह एक जीर्ण रोग है जो कभी कभी अप्रत्याशित रूप से सामने आ सकता है।